अध्याय- पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय –पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

5.2 समस्या कथन

5.3 शोध में प्रयुक्त चर

5.4 शोध के उद्देश्य

5.5 शोध की परिकल्पना।

5.6 प्रतिदर्श

5.7 उपकरण

5.8 प्रयुक्त सांख्यिकी

5.9 शोध निष्कर्ष

5.10 सुझाव

5.11 शैक्षिक सुझाव

5.12 भावी शोध हेतु समस्याएँ

अध्याय –पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना –

प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के साथ–साथ ही प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक सुधार की ओर भी शिक्षाविदों का ध्यान आकर्षित हुआ। वर्तमान में प्राथमिक शिक्षा निम्न स्तर उनकी चिंता का कारण बना हैं। प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तरों के निर्धारण की सिफारिश की गई।

प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तर के निर्धारण के लिए एक समिति का निर्माण किया। समिति ने अपनी रिपोर्ट में भाषा, गणित और पर्यावरण अध्ययन में कक्षा 01 से 05 तक के लिए न्यूनतम अधिगम स्तरों का निर्धारण दक्षताओं के रूप में किया और कहा कि प्रत्येक विषय में प्रत्येक कक्षा के अंत में प्रत्येक विद्यार्थी को एक निश्चित स्तर पर प्राप्त करना आवश्यक होगा। हिन्दी भाषी क्षेत्रों की तुलना में अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा के संदर्भ में बच्चों को ज्यादा कठिनाई होती हैं। जितनी सरलता से अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते है, उतनी सरलता से हिन्दी भाषा का प्रयोग नहीं कर पाते, जिसके कारण वे हिन्दी भाषा अधिगम में अनेक प्रकार की कठिनाईयों का सामना करते हैं।

यदि इन कठिनाईयों का निवारण, समय पर नही किया गया तो वह हिन्दी विषय में निरंतर पिछड़ते चले जाते है और एक स्थिति ऐसी आती है कि विद्यार्थी बीच में ही शाला छोड़ देते हैं। इसलिए समय पर विद्यार्थियों की कनिाईयों का निवारण करना आवश्यक हो जाता हैं। इसके लिए जरूरी हो जाता है पहले इन कठिनाईयों की

पहचान करना। इसी को ध्यान में रखकर शोधकर्ता ने अध्ययन हेतु इस समस्या का चयन किया।

5.2 समस्या कथन –

"कक्षा 7वीं के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाईयों का अध्ययन"

5.3 शोध में प्रयुक्त चर –

जिस गुण विशेषता या अवस्था का अध्ययन करना शोधकर्ता का उद्देश्य है उसे चर कहेगें। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने निम्न चरों को प्रस्तुत किया हैं।

1. **स्वतंत्र चर**

- ❖ लिंग – छात्र, छात्राऐं
- ❖ विद्यालय का प्रकार – सरकारी,गैरसरकारी
- ❖ विद्यालय का स्थान – ग्रामीण, शहरी

2. **आश्रित चर**

हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाई

5.4 शोध के उद्देश्य –

1. कक्षा 7वीं के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाईयों का अध्ययन करना।
2. कक्षा 7वीं के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाईयों का अध्ययन करना।
3. कक्षा 7वीं के शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाईयों का अध्ययन करना।
4. कक्षा 7 के ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाईयों का अध्ययययन करना।

5.5 शोध की परिकल्पनाएँ–

1. कक्षा 7वीं के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाईयों में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।
2. कक्षा 7वीं के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाई में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।
3. कक्षा 7वीं के शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाई में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।
4. कक्षा 7वीं के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाई में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

5.6 प्रतिदर्श –

प्रस्तुत लघुशोध कार्य में नवसारी जिले के तीन ग्रामीण एवं तीन शहरी विद्यालय के कक्षा 7 के विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया।

छात्र – 60

छात्राऐं – 60

योग – 120

5.7 उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने स्वयं द्वारा निर्मित हिन्दी व्याकरण पर आधारित प्रश्नपत्र का उपयोग किया। जिसमें 10 प्रश्न थे। जो विभिन्न व्याकरणिक बिन्दुओं पर आधारित थे।

5.8 प्रयुक्त सांख्यिकी –

प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधकर्ता ने निम्नलिखित सांख्यकीय विधियों का प्रयोग किया।

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. टी मान

5.9 शोध निष्कर्ष–

इस शोधकार्य के प्रदत्तों का विश्लेषण करके जो निष्कर्ष प्राप्त हुआ जो निम्नलिखित हैं–

1. कक्षा 7वीं के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाई में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. कक्षा 7वीं के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाई में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. कक्षा 7वीं के शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाई में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. कक्षा 7वीं के ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाई में सार्थक अंतर पाया गया।

5.10 सुझाव–

प्रस्तुत अध्ययन प्रारंभिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं को हिन्दी भाषा अधिगम में होने वाली कठिनाईयों की पहचान करता हैं। इसमें हमे यह ज्ञात हुआ है कि हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाई व्याकरण में कहाँ–कहाँ और किस बिन्दु में कितने प्रतिशत हुई और उनमें लिंग, विद्यालय के स्थान के आधार पर क्या अंतर हैं इस समस्याओं के बारे में शिक्षकों को अवगत कराये तो शिक्षक उन कमियों को दूर कर सकेंगे और छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी भाषा के अधिगम में कठिनाई कम होगी।

5.11 शैक्षिक सुझाव–

ग्रामीण विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं को शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक कठिनाई हो रही हैं कई बिन्दुओं में छात्र एवं छात्राओं की अधिगम कठिनाईयों में भी अंतर हैं। इसके विभिन्न कारण हो सकते हैं। जिसके लिए निम्न सुझाव दिये जा रहे हैं।

- ग्रामीण विद्यालयों के अध्यापको को समय पर मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण देते रहना चाहिए।
- ग्रामीण विद्यालयों में भौतिक सुविधाओं की कमी है, वहाँ सुविधाएँ बढ़ाई जाए।
- माता-पिता विद्यार्थियों की पढ़ाई के लिए सजग नहीं है। इसलिए अध्यापकों को उनसे मिलकर उनको सजग करना चाहिए।
- शिक्षकों को पाठ्यपुस्तकों के विषयवस्तु पर नहीं बल्कि हिन्दी को दैनिक जीवन से जोड़कर पढ़ाना चाहिए।
- बच्चों के अधिक से अधिक प्रश्नों को हल करने चाहिए।
- बच्चों को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्ति के अवसर दिए जाए।
- 'हिन्दी' विषय को रोचकता के साथ पढ़ाना होगा।
- हिन्दी व्याकरण के विविध बिन्दुओं को व्यवहारिक उदाहरण से पढ़ाना चाहिए जो उदाहरण लिये जाये वे जहाँ तक संभव हो बच्चों की पाठ्यपुस्तकों से ही लिये जाये।
- शिक्षकों को उचित दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग करना चाहिए। इससे व्याकरण शिक्षण की निरसता दूर करने में बड़ी सहायता मिलती हैं।
- कमजोर विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त शिक्षण समय रखा जायें।
- खेल द्वारा शिक्षा देकर उनको प्रोत्साहित करना चाहिए। भाषा संबंध खेलों का आयोजन करना चाहिए जैसे- शब्द निर्माण का खेल, तुकबंदी अंत्याक्षरी। इससे विद्यार्थियों का शब्द भण्डार विकसित होता हैं।
- दक्षता आधारित शिक्षण पर बल दिया जाना चाहिए।
- शिक्षकों को हिन्दी भाषा पढ़ाते समय पाठ्यपुस्तकों के विषयवस्तु पर नहीं बल्कि भाषा के कौशलों पर अधिक ध्यान देना चाहिए।
- विद्यार्थियों को इस प्रकार के प्रश्न अभ्यासार्थ देने चाहिए जिससे उनका शब्द भण्डार बढ़ें।

- ❖ पाठ पढ़ाते समय मुहावरों के अर्थ समझाना चाहिए। तथा साथ ही बोल–चाल की भाषा में प्रयुक्त होने वाले मुहावरों की व्याख्या की कक्षा में करनी चाहिए।
- ❖ लेखन से संबंधित प्रत्येक विद्यार्थी की उत्तर पुस्तिका में वर्तनी की अशुद्धियों की जाँच करनी चाहिए।
- ❖ अर्थभेद संदर्भ में हो रही कठिनाईयों के लिए शिक्षकों को शब्द का सही अर्थ विद्यार्थियों को समझाना चाहिए।
- ❖ लिंग के संदर्भ में हो रही कठिनाईयों के लिए शिक्षकों को गुजराती एवं हिन्दी दोनों भाषा में शब्दों का प्रयोग करके समझाना चाहिए।
- ❖ अभ्यास के लिए बच्चों को जो भी प्रश्न दिए जाये वे भी रोचक होने चाहिए। बच्चों को रिक्त स्थानों की पूर्ति, वाक्य रचना सुधार, समान विलोम और पर्यायवाची शब्दों का चयन, लिंग परिवर्तन के लिए उपयुक्तम शब्दों का चुनाव आदि कार्य दिया जा सकता है।

5.12 भावी शोध हेतु सुझाव–

1. माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में होनेवाली अधिगम कठिनाईयों का 'निदानात्मक अध्ययन' भी किया जा सकता हैं
2. इस अध्ययन में हिन्दी व्याकरण के जो बिन्दु लिए गये है उनके अलावा अन्य बिन्दु लेकर उनका निदानात्मक परीक्षण तैयार कर अध्ययन किया जा सकता है।
3. बड़ा न्यादर्श लेकर इसी कार्य को उच्च स्तर पर किया जा सकता हैं।
4. शिक्षा के बोझ से मुक्त करानेवाले मुख्य परिबल के रूप में अधिगम शैलीः एक अध्ययन।
5. उच्च एवं निम्न सफलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के रूप में अधिगम शैली का अध्ययन।
6. विद्यार्थियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अधिगम शैली पर प्रभाव।
7. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की असफलता एवं शाला त्याग के मूल में अधिगम शैली तथा न समझ पाने का बोझः एक अध्ययन।